फोटो साभार : परमार्थ आश्रम, ऋषिकेश

सेहत, शोहरत और कारोबार से जुड़ा योग

ऋषि-महर्षियों के आश्रमों की देहरी लांघ कर वातानुकूलित स्पा सेंटरों, फाइव स्टार होटलों और वैश्विक बाजार का हिस्सा बन चुका है योग। आपाधापी भरी जिंदगी में योग और उसके बाजार की शक्ल तेजी से बदल रही है। बाबाओं से लेकर बॉलीवुड की सिनेतारिकाओं तक के लिए चोखा धंधा साबित हो रहे योग के उद्योग पर प्रकाश डालता लेख -

■ मधुकर मिश्र

खुले आसमान के नीचे योग करना अब पुरानी बात हो गई है। साधु-संतों के आश्रमों, मठों से निकलकर आज योग बड़े होटलों के वातानुकूलित कमरों और स्पा सेंटरों तक पहुंच गया है। देश-विदेश में योग के एक से बढ़कर एक स्टूडियो खुल रहे हैं। इन दिनों योग शिविरों के साथ योगा क्लासेस और योगा रिसॉर्ट के विज्ञापनों का शुमार है। योग अब सेहत के साथ स्ट्रेटस सिंबल से भी जुड़ गया है। उद्योग में तब्दील हो चुके योग की न सिर्फ तकनीक में बल्कि इसे सिखाने वाले योगाचार्यों में भी खासा बदलाव देखने को मिलता है। कभी दूरदर्शन पर धीरेंद्र ब्रह्मचारी द्वारा सिखाए जाने वाले योग की टिप्स और अय्यंगर के योग से जुदा नई पीढ़ी के योगाचार्यों से मिलकर आपको जरा भी अहसास नहीं होगा कि किसी प्राचीन विधा सिखाने वाले किसी योगी या साधु से मिल रहे हैं। नए जमाने के योगाचार्य किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी के प्रबंधक से दस कदम आगे नजर आते हैं। बिल्कुल वैसे ही जैसे बाबा रामदेव अपने उत्पाद की ब्रांडिग के मामले में पेप्सी की सीइओ इंदिरा नूई को कई कदम पीछे छोड़ देते हैं। यह बात अलग है कि बाबा ने सिर्फ योग को भारत में पुनर्जीवित करने का कठिन काम कर दिखाया बल्कि लोगों को इसी बहाने सुबह जल्दी उठना भी सिखा दिया।

बीते कुछ सालों में योग के बाजार पर नजर दौड़ाएं तो पाएंगे कि इसने न सिर्फ देश में बल्कि विदेशों में तेजी से रफ्तार पकड़ी है। विदेशों में कई योगाचार्य बहुत पहले से ही इस विधा को विस्तार देने में जुटे हुए थे लेकिन बीते एक दशक में योग चंद बाबाओं के चंगुल

योग के प्रचलित अवतार

रामदेव योग – मुख्य रूप से कपालभाति और अनुलोम-विलोम पर आधारित बाबा रामदेव द्वारा सिखाए जाने वाली प्रक्रिया में योग, आयुर्वेद और नेचुरोपैथी तीनों को शामिल किया गया है।

श्री श्री योग – श्री श्री के निर्देशन में सिखाए जाने वाले इस योग में तीन दिन का शिविर लगता है, जिसमें योगासन और प्राणायाम आधारित क्रियाएं कराई जाती हैं।

शिवानंद योग – इसमें ध्यान और अध्यात्म मुख्य है। इसके अलावा इसमें षट्कर्म, शोधन क्रिया भी करवाई जाती है। इस योग में प्राणायाम वगैरह करवाए जाते हैं।

अय्यंगर योग – विशेष तरह की रस्सी, कुर्सी, लकड़ी मूढ़ा, गेंद, चटाई आदि के जरिए करवाए जाने वाले इस योग को इंस्ट्रुमेंटल योगा भी कहा जाता है। पश्चिमी देशों में योग का यह भारतीय रूप काफी लोकप्रिय हुआ।

पावर योगा – यह मुख्य रूप से विन्यास स्टाइल योगा है जो कि अष्टांग मैथड है। योग में जो एक्सरसाइज होती है उसे पावर योगा में बहुत तेज तर्रार ढंग से कराया जाता है। इसे तेजी से पतले होने का असरदार तरीका भी माना जाता है।

हॉट योगा– 50 से 75 मिनट तक चलने वाले हॉट योग सेशन के लिए कमरे का तापमान 40 डिग्री सेल्सियस रखकर विभिन्न आसनों और श्वास संबंधी व्यायामों का अभ्यास कराया जाता है। इस योग को करने से शरीर का लचीलापन, संतुलन, ऊर्जा व जीवनीशक्ति बढ़ती है। वजन कम होता है और मांसपेशियां मजबूत होती हैं।

फेशियल योगा – फेशियल योगा को चेहरे की मांसपेशियों को पुनः जवान बनाने के लिए किया जाता है।

से निकलकर एक नए ट्रेंड के रूप में विकसित हुआ है। योग से जुड़े इस वर्ग ने बाजार की मांग के हिसाब से उसे देश-दुनिया के सामने परोसना शुरू किया है। उन्होंने पश्चिमी कसरतों के साथ योग का फ्यूजन भी किया है। मसलन एथलीट के लिए 'पावर योग' है तो वहीं गर्भवती महिलाओं के लिए 'एक्वा योग' है। यह योग के प्रति दीवानगी है जो लोग अब एंटी-एजिंग प्रोड्क्ट की जगह 'फेशियल योग' का सहारा लेने लगे हैं। यूरोपीय देशों में योग के प्रति बढ़ती दीवानगी को आप इनसे जुड़ी वेबसाइटों पर जाकर जान सकते हैं, जहां विभिन्न प्रकार के योगा की लिस्ट के साथ उनकी फीस डॉलर में दी गई होती है। कुछ साल पहले हुए एक रिसर्च के मुताबिक अमेरिका में लोग हर साल तीन अरब डॉलर योग और उससे जुड़ी चीजों पर खर्च करते हैं। यहां योग से जुड़ी चीजों जैसे - माडर्न मैट, किताबों, ड्रेस, डिजाइनर तकिए आदि का एक बड़ा बाजार मौजूद है। हालांकि अमेरिका में साल 2005 से ही नेशनल एसोसिएशन ऑफ क्रिश्चियन योगा टीचर्स द्वारा इससे संबंधित किताबें, ऑडियो और वीडियो सीडी का बाजार विकसित किया जा चुका है। एक आंकड़े के मुताबिक अमेरिका में तकरीबन पौने दो करोड़ लोग योगासन करते हैं। अमेरिका में कुंडलिनी ध्यान योग की जानी-मानी संस्था 'गोल्डन ब्रिज' की संस्थापक गुरमुख कौर खालसा अब तक हजारों लोगों को योग प्रशिक्षक बना चुकी हैं। जाहिर तौर पर बाबा रामदेव की तरह तमाम योगाचार्यों की नजर योग के इस बड़े बाजार पर टिकी होगी। वैसे विक्रम चौधरी इस समय अमेरिका के सबसे लोकप्रिय योगगुरु हैं जिनका 'नेम विक्रम योग' पश्चिमी देशों में काफी धूम मचा रहा है। उन्होंने हठ योग की कई पद्धतियों को कॉपीराइट भी करा रखा है। विक्रम के 220 देशों में सात सौ योग स्कूल हैं। बिक्रम की योगा क्लास की लोकप्रियता का अंदाजा ऐसे लगाया जा सकता है कि उसमें शामिल होने वालों में अमेरिकी राष्ट्रपति से लेकर मडोना तक शामिल हैं।

अमेरिका की तरह पड़ोसी मुल्क चीन में भी योगा की धूम है। कूंगफूं की जमीन पर भारत से गए मनमोहन भंडारी ने योग की ऐसी फसल उगाई कि उनका योग से जुड़ा कारोबार लाखों डालर को पार कर गया। भंडारी चीन में 'योगी योगा' के नाम से एक सेंटर चलाते हैं। मनमोहन भंडारी पर चीनी सेंट्रल मीडिया ने 52 योग डीवीडी बनाई है। उनकी योग पर आधारित डीवीडी और किताबें न सिर्फ चीन में बल्कि पूरी दुनिया में बिक रही हैं। गौरतलब है कि चीन के राष्ट्रपति शी चिनपिंग भी चीन में योग के अत्यंत लोकप्रिय होने की बात स्वीकार कर चुके हैं। भारत यात्रा के दौरान उन्होंने स्वीकार किया था कि उनकी पत्नी पेंग लियुआन भी इन दिनों योग सीख रही हैं।

अब जबकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल पर देश-दुनिया ने हर साल 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने की बात मान ली है तो जाहिर है कि अब इसे एक नया मुकाम हासिल होने वाला है। गौरतलब है कि प्रधानमंत्री ने अपने पिछले मंत्रिपरिषद के विस्तार

देशी से ज्यादा विदेशियों को भाता है योग

तमाम विवादों के बावजूद भारतीय योगाचार्य लोगों की पहली पसंद क्यों बने हुए हैं? तेजी से उद्योग में तब्दील होते योग को आखिर किन लोगों से खतरा है, जानने के लिए गवर्नेंस नाउ ने ऋषिकेश स्थित परमार्थ आश्रम के प्रमुख स्वामी चिदानंद मुनि से विस्तार से बातचीत की :

मौजूदा समय में योग कितना बड़ा कारोबार बन चुका है?

योग का प्रचार-प्रसार बहुत बड़े पैमाने पर हो रहा है। यह भारत की परिधि लांघकर दुनिया के कोने-कोने में पैर पसार चुका है। प्रतिदिन विश्व भर से हजारों लोग योग का प्रशिक्षण लेने के लिए आ रहे हैं। अहम बात यह कि इनमें से अनेक लोग अपने देश वापस जाकर इस विद्या का लाभ अनेकानेक लोगों को दे रहे हैं। ऐसे में सहज रूप से ही यह विद्या तमाम लोगों की आमदनी का जरिया बनी है। मेट्रो शहरों में लोगों के द्वारा योगाचार्य की सेवा लेना एक स्टेट्स सिंबल हो गया है। हालांकि इसका दोहरा लाभ देश व समाज को मिल रहा है। एक ओर जहां लोगों को स्वास्थ्य लाभ मिल रहा है वहीं बड़ी संख्या में लोग इसके जरिए आत्मनिर्भर भी हो रहे हैं।

क्या भारत के मुकाबले विदेशों में योग का प्रचार ज्यादा हुआ है?

जी हाँ। यह सही है कि योग के ज्ञान-विज्ञान ने भारत के बाहर तेजी से पांव पसारे हैं। अमेरिका, यूरोप, रूस, चीन, सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैंड, बाली जैसे अनेक देशों में योग का भारी विस्तार हुआ है। यहां तक कि ईरान, तजाकिस्तान आदि देशों में योग का अप्रत्याशित विस्तार हुआ है। यहां योग न सिर्फ तन-मन को स्वस्थ बनाने का माध्यम बना बल्कि कुछ लोगों के जरिए इसने उद्योग की शक्ल भी अख्तियार कर ली है।

जिस तरह विदेशों में न्यूड योगा, फेसियल योगा, पावर योगा आदि के नाम से परोसा जा रहा है, क्या उसमें वास्तविक योग कहीं खो सा नहीं गया है?

बीते एक दशक में योग की नई-नई विधियां तेजी से विकसित हुई हैं और इसने विश्व के लाखों लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है लेकिन योग की ये विधियां वास्तविक योग का प्रतिनिधित्व नहीं करतीं। अभी इस स्तर पर यह कहना उचित होगा कि ये

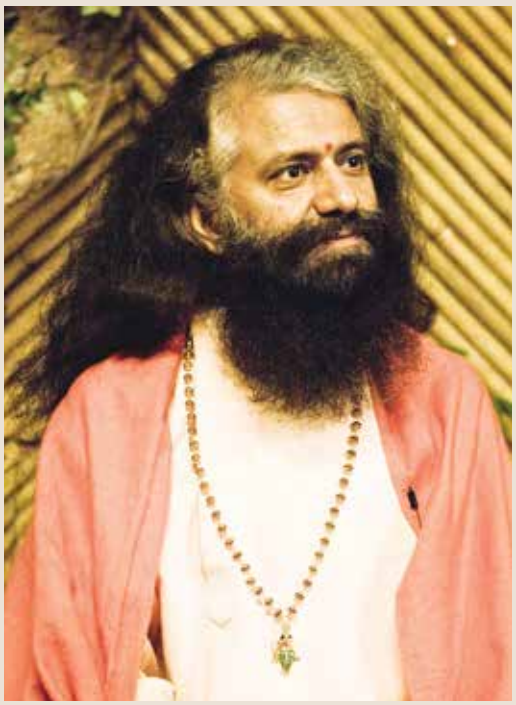

विधियां योग विद्या के जनक महर्षि पतंजलि के असल योग विज्ञान तक पहुंचाने के लिए आरंभिक सीढ़ी हैं। हमारा दायित्व बनता है कि हम ऐसे लोगों को योग की उच्च अवस्थाओं में ले जाएं। इससे उनमें योग का सही अर्थ जानने की जिज्ञासा बढ़ेगी, जिसको शांत करना एक बहुत बड़ा काम होगा। 'निज पर शासन-फिर अनुशासन' के मंत्र-सूत्र को सामने रखकर 'योग गर्वेनेंस नाउ एंड फॉर एवर' की अवधारणा को साकार किया जा सकता है। जब व्यक्ति योग की वास्तविक गहराइयों से जुड़ेंगे, तब वह योग व्यक्ति को भीतर से जोड़ देगा, मजबूत मन भीतर स्थित होगा और स्वस्थ तन बाहर व्यवस्थित होगा, तब योग स्ट्रेट मैनेजमेन्ट सेल्फ मैनेजमेन्ट की चाबी बन जायेगा।

योग को पेटेंट कराने के पीछे का खेल क्या है? भारत इसे लेकर आखिर कितना सतर्क दिखता है?

योग को पेटेंट करके लोग अपना बाजार बढ़ाना चाहते हैं। कुछ लोगों ने इसके लिए प्रयास भी किया। धन्यवाद देना होगा भारतीय योग संस्थानों को, जो इसके दुष्परिणामों के प्रति बहुत सतर्क हैं। वास्तव में योग भारत का गौरव ही नहीं बल्कि हमारी अमूल्य निधि है। यह अमूल्य प्राचीन विद्या खुले आकाश में दिग-दिगंत तक विस्तार पाती रही है, इसे पेटेंट की सीमा में आबद्ध करके संकीर्ण बनाने का कोई औचित्य नहीं है। भारतीय मन इसे कभी भी स्वीकार नहीं करेगा और खुले आसमान के तले योगविद्या का लाभ विश्व-वसुधा को दिया जाता रहेगा।

परमार्थ निकेतन के अंतरराष्ट्रीय योग महोत्सव में योग से जुड़ी देशी-विदेशी शख्सियतें क्या अपनी मार्केटिंग या ब्रांडिंग करने के लिए नहीं पहुंचती हैं?

बिल्कुल नहीं। विश्व भर की ये योग प्रतिभाएं अपनी विद्या और अनुभव को बांटने और नई विधाएं सीखने के लिए यहां आती हैं, ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इससे लाभान्वित हो सकें। इसका लाभ यह हो रहा है कि भारतीयों को अपनी प्राचीन विद्या की कीमत व महत्व का अहसास हुआ है और योग के प्रति उनका रुझान तेजी से बढ़ा है।

योग के प्रति देशी-विदेशी में से कौन ज्यादा जागरूक होता दिख रहा है?

देखिए, भारत के हर सांस में योग है। सदियों से यहां मन की शांति के लिए लोग योग सीखते और करते रहे हैं। देश हो अथवा विदेश, लोग आसनों व विधाओं के प्रति ही नहीं, बल्कि योग के सही अर्थ को पाने के लिए

जागरूक हो रहे हैं, सहज हो रहे हैं। यह बात अलग है कि भारतीयों से ज्यादा विदेशियों में योग विज्ञान के प्रति उत्सुकता, उत्कंठा और रुचि देखने को मिल रही है। यह बात स्वागत योग्य है। भारतीय धरती से निःसृत योग संपदा सबके लिए है, सदा के लिए है।

क्या आज भी योग सीखने के लिए विदेशियों की पहली पसंद भारत है?

जी हाँ। आज भी विदेशी भारतीय योगियों से योग का ज्ञान-विज्ञान सीखना ज्यादा पसंद करते हैं। विदेशों में पिछले कुछ समय से भारतीय योगियों ने विकल्प के रूप में कुछ विधियां विकसित की हैं और योग से जुड़े अनेकों संस्थान खोले हैं।

विदेशों में योग के कारोबार के लिए वहां सरकारें कितना मदद करती हैं?

योग के प्रसार मे अनेकों देशों में अनुकूल माहौल है। वहां सरकारें योग विद्या के विस्तार में बाधक नहीं बनतीं। अनेकों देशों में इसके लिए पूरी स्वतंत्रता है। वहां बहुत सारे लोग निज शरीर की स्वस्थता के लिए तो बहुत से लोग मन की शांति के लिए योग सीखते और करते हैं। हालांकि दुनिया मानती है कि भारत की धरती ही योग की जन्मभूमि है, अतः सहज ही लोग इस धरती पर इसकी अनुभूति करना चाहते हैं और चाहते हैं कि भारत के योगियों के माध्यम से इस विद्या को और अधिक जाना जाए। उससे जुड़ा जाए तथा उस विद्या का लाभ अपने देशवासियों को भी दिलाए जाए।

आने वाले समय में योग के बाजार का क्या भविष्य देखते हैं?

निश्चित तौर पर आगे आने वाला समय योग के लिए ढेरों संभावनाओं से भरा है। कारोबार की दृष्टि से भी इसका फ्यूचर बहुत बढ़िया है। जब लोग योग को जानेंगे तो भारत को जानेंगे, भारतीय संस्कृति को जानेंगे, ऋषि-मुनियों के ज्ञान-विज्ञान की गहराई को जानेंगे, इससे सबका बहुविधि कल्याण होगा।

योग का बढ़ता बाजार योग के लिए कितना फायदेमंद या नुकसानदायक है?

देखिए, योग तो सदा से ही फायदेमंद रहा है और रहेगा। योग तो जोड़ने की विधि है, विद्या है। यह तन के विकार को ही नहीं, मन के विकार को भी भगाने की ताकतवर विधा है। यह जरूर है कि हमें योग के क्षेत्र में आने वाली विकृतियों को रोकना होगा। योग समाज को उद्योगी, उपयोगी और सहयोगी बनाने में सक्षम है, इसलिए इस विद्या का संरक्षण हर दृष्टि से लोक हितकारी है। यह संरक्षण केवल भारत ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व के हित में बेहद जरूरी है।

बढ़ रहा है बाजार

- योगा मैट
- योगा आसान
- योगा तकिया
- योगा बेल्ट
- योगा स्ट्रेप्स
- योगा ब्लॉक्स
- योगा दस्ताने और मोजे
- योगा ड्रेस
- योगा टावेल
- योगा बॉल
- वाल रोप्स

में योग के लिए एक मंत्री को नामित कर 'आयुष' नाम का एक अलग मंत्रालय बनाया है, जो इससे जुड़े मामलों को देखेगा। ब्रांड बन चुके योग के जरिए सरकार ने भी इसके जरिए विदेशी मुद्रा कमाने की पूरी तैयार कर ली है। वाणिज्य मंत्रालय योग को प्रमुख सेवा क्षेत्र (सर्विस सेक्टर) में शामिल करने की कवायद में जुट गया है और इस काम में वह 'आयुष' विभाग की मदद लेगा। दरअसल, मंत्रालय का मानना है कि योग के लिए मौजूदा समय में बहुत कम स्तरीय स्कूल हैं और जो हैं भी उनमें मान्यता प्राप्त पाठ्यक्रम मौजूद नहीं है। ऐसे में मंत्रालय योगा को सेवा क्षेत्र के रूप में विकसित करने की योजना बना रहा है ताकि योग का एक मानक तय किया जा सके। मानक तय करने की जिम्मेदारी 'आयुष' विभाग को दी जाने की बात की जा रही है। हालांकि भारत में सिखाए जाने वाले योग को अंतरराष्ट्रीय जगत की स्वीकृति भी मिली है। पिछले साल ही डब्ल्यूएचओ ने पहली बार भारत में योग के लिए दिल्ली स्थित मोरार जी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान को साझेदारी केंद्र बनाया था। बहरहाल, मोदी के योग प्रेम को देखते हुए भाजपा शासित राज्य सरकारें भी सक्रिय हो रही हैं। हाल ही में मध्य प्रदेश और हरियाणा की सरकार ने योग को स्कूलों से जोड़ने का ऐलान किया है। योग को बढ़ावा देने के लिए हरियाणा के स्वास्थ्य, खेल एवं युवा मामले के मंत्री अनिल विज ने खुद स्वामी रामदेव से मिलकर मदद लेने की बात कही है। जाहिर तौर पर सरकार की इस पहल से योग से जुड़े लोगों को बड़ी तादाद में रोजगार के अवसर मिलेंगे।

जिस तरह सेहत से लेकर सौंदर्य बरकरार रखने की चाहत लिए भारतीय जनमानस की दिलचस्पी भी योग की तरफ बढ़ती जा रही है उसमें योग के बाजार की डिमांड को पूरा करने के लिए कुशल योगाचार्यों के साथ इससे जुड़े उत्पादों की आपूर्ति की आवश्यकता होगी। देश में योग के कई जाने-माने केंद्र हैं, जहां से प्रशिक्षण लेकर तमाम देशी-विदेशी योग करने और करवाने वाले दिन-प्रतिदिन तैयार हो रहे हैं। फिर चाहे हरिद्वार स्थित बाबा रामदेव का 'पतंजलि योग संस्थान' हो या फिर मुंगेर स्थित 'बिहार योग विद्यालय' - जिसके 200 से अधिक अंतरराष्ट्रीय एवं सैकड़ों की तादाद में राष्ट्रीय केंद्र हैं। भारत में इस समय एक प्रोफेशनल योग शिक्षक एक घंटे योग सिखाने के लिए 150 से 1500 रुपये फीस ले लेता है। कहने का तात्पर्य यह कि महानगरों में एक कुशल योगाचार्य महीने में 15,000 से 50,000 रुपये महीने कमा लेता है। जनसेवा की बात यदि जानें दें तो अब स्कूल, पार्कों आदि में भी सशुल्क योग प्रशिक्षण शिविर लगने लगे हैं। जिस तरह से योग का बाजार बढ़ता जा रहा है उसमें अब योग सीखना सस्ता सौदा नहीं रह गया है। देवभूमि कहलाने वाले उत्तराखंड में कई ऐसे योग केंद्र हैं जहां एक महीने के कोर्स के लिए दो से तीन हजार डॉलर की फीस चुकानी पड़ जाती है। यदि आप किसी जाने-माने योगी बाबा के शिविर में अगली कतार में शामिल होकर योग सीखने की ख्वाहिश रखते हैं तो आपको इसके लिए 50 हजार रुपये तक खर्च करने पड़ सकते हैं।

योग के बाजार को आगे बढ़ाने में बाबाओं के साथ के बॉलीवुड ने भी अहम भूमिका निभाई है। फिर चाहे शिल्पा शेट्टी की 'शिल्पाज योगा' हो या फिर बिपाशा बसु की फिटनेस डीवीडी 'लव योर सेल्फ'। जाहिर तौर पर योग पर आधारित इन सीडी को बाजार से खरीदने वाले युवतियों की चाहत इन अभिनेत्रियों जैसे फिगर पाने से लेकर सेहत को चुस्त-दुरुस्त रखने की होगी। योगा से जुड़े उत्पादों में योगा ड्रेस, योगा बैग्स, बेल्ट, जलनेति के लिए नेति पॉट, विशेष आसनों के लिए तकिए आदि अपना एक अलग बाजार है। योगा करने के दौरान खुशनुमा माहौल बनाए रखने के लिए बाजार में योगा परफ्यूम और म्युजिक सीडी भी मौजूद है। युवाओं को लुभाने के लिए योग से जुड़े ऐसे मोबाइल एप्लीकेशन भी उपलब्ध करवाए जा रहे हैं जिन्हें अपलोड करके यह जाना जा सकता है कि कौन सा आसन कितनी देर करना है।

अब चूंकि योग एक ऐसा उत्पाद बन चुका है जिसकी चहुंओर मांग बढ़ी है, ऐसे में कोई उस पर अपना दबदबा कायम रखना चाहता है। योग के जरिए अधिक से अधिक लाभ कमाने की चाहत का ही नतीजा है कि साल 2007 में अमेरिका में योग से संबंधित लगभग 168 योग उपकरणों को पेटेंट करा लिया। इस चुनौती से निबटने के लिए भारत सरकार 1500 योग मुद्राओं का एक वीडियो संग्रह बना रही है ताकि विदेशी कंपनियां इसका पेटेंट न करा सकें। तीन साल की कोशिशों के बाद अब तक 900 योग मुद्राओं का संग्रह तैयार हो चुका है। सभी मुद्राओं के लिखित विवरण का कई भाषाओं में अनुवाद भी किया जा रहा है। इस वीडियो संग्रह और लिखित विवरण विभिन्न देशों में पेटेंट, कॉपीराइट और ट्रेडमार्क जारी करने वाली संस्थाओं को भेजने की योजना है। ■

madhukarmishra@governancenow.in